No. AHY- H (II) F.9- 60/99-Vol.V-A
Directorate of Animal Husbandry,
Himachal Pradesh, Shimla-5.

From: - The Director, Animal Husbandry,
Himachal Pradesh, Shimla- 5.

To

1 .The JointDirectorAH Palmpur
2. The Deputy Director (A.H. /B),
District _____, H. P.
3. The Assistant Director (C.P.), Palampur Distt. Kangra,
Assistant Director (AH/B), Pangi at Killar Distt. Chamba.
Assistant Director (AH/B), Kaza Distt. Lahaul & Spiti.
Assistant Director (SD), Bharmour Distt. Chamba.

Dated Shimla -5 the 03rd April, 2014.

Subject: - Regarding recommendations for guidelines on Animal Husbandry in context to HPSRLM in Himachal Pradesh

Memo,

Kindly refer to the email/letter of C.E.O (HPSRLM) Rural Development Department Block No 27, SDA Complex Kasumpti Shimla-171009 dated 31/03/2014 regading subject cited above.

In this connection, recommendation for guidelines on Animal Husbandry in context to HPSRLM in HimachalPradesh is annexed for your information please.

(Dr.K.S.Pathania)
Director of Animal Husbandry,
Himachal Pradesh, Shimla-5
Phone: 0177-2830089
e.mail:dir-ah-hp@nic.in

(Encl: 6 No.)

05 APR 2014

No. As above **Dated: Shimla-5 the 3rd April, 2014.**

Copy forwarded to:

Nodal Officer IT for information & necessary action. (AH/B) Shimla-5

(Dr.K.S.Pathania)
Director of Animal Husbandry,
Himachal Pradesh, Shimla-5
Phone: 0177-2830089
e.mail:dir-ah-hp@nic.in

DDC (Poultry)
Send copy to all DDs / AD Poultry . Bhumman, Palampur, Kaza etc.
01/04/14

152
03/04/2014

3/4/2014

हिमाचल प्रदेश ग्रामीण आर्थिकी में पशु पालन की भूमिका व राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा इसका उत्थान।

परिचय :- हिमाचल प्रदेश में 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग ग्रमीण क्षेत्रों में रहतें है। यह जनसमूह सीधे तौर पर कृषि, बागवानी व पशु पालन के व्यवसाय से जुड़े है। यह तथ्य अब सही माना गया है कि मिश्रित खेती वाड़ी का तरीका जिसमें कि कृषि बागवानी व पशु पालन शामिल है जोकि लाभप्रद है क्योंकि मिश्रित खेती वाड़ी में ही किसान उपलब्ध संसाधनों का सही तरीके से प्रयोग कर सकता है। हिमाचल प्रदेश में किसानों के पास कृषि योग्य खेती कम है और उस में भी ज्यादातर खेती वर्षा के ऊपर निर्भर है इसलिए किसान खेती से होने वाली आय से अपने परिवार व खेती पर होने वाले खर्च का वहन नही कर पाता ज्यादातर खेती वर्षा के ऊपर निर्भर होने के कारण खेती से एक निशचित आय लेना भी संभव नही है। पशु पालन का व्यवसाय किसान तथा प्रदेश की आय का एक मुख्य स्त्रोत है। पशु पालन से न केवल दूध, ऊन,मांस, अण्ड़े, चमड़ा गोबर, खाद, तथा खेती करने के लिए पशुधन का उपयोग होता है बल्की ग्रामीण क्षेत्रों में यह लाखों लोगों के स्वरोजगार का भी साधन है। हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक स्थिति तथा जलवायु पशु पालन के लिए बहुत उपयुक्त है। यहां पर उपलब्ध घासनियां, जंगल व उपलब्ध वनस्पती पशु पालन के व्यवसाय में सहायक है। हिमाचल प्रदेश संकर नसल की गायों के पालन के लिए उपयुक्त है। उंचाई वाले ठण्ड़े क्षेत्र भेड़ बकरी व याक पालन के लिए उपयुक्त है। हिमाचल में संकर नसल की गायों का पालन बहुत लोकप्रिय हो रहा है और इस से किसानों की आय में लगातार बढौतरी हो रही है। डेरी पालन के व्यवसाय से पशु पालक को पूरी साल में लगातार एक निश्चित आय उपलब्ध होती है। आय बढोतरी के साथ–साथ दुधारू पशु पालक के परिवार का खान–पान का स्तर बढ़ जाता है और सदस्यों में कुपोषण की समस्या नही होती क्योंकि सदस्यों को दूध तथा दूध के उत्पाद काफी मात्रा में उपलब्ध रहते है।

हिमाचल प्रदेश में पशुपालन विभाग के आंकड़ो के मुताबिक पशुधन की संख्या निम्न प्रकार से है।

पशुधन	गाय प्रजाती	भैंस प्रजाती	भेड़	बकरी	घोड़े व गधे	खच्चर	याक	खरगोश	कुते	कुल
सं0	22.69 लाख	7.61 लाख	9.01 लाख	12. 41	0.13 लाख	0.19 लाख	1705 लाख	6620 लाख	2.12 लाख	52.26 लाख

हि0 प्र0 में पशुधन से प्राप्त उत्पाद वर्ष 2011–12 (पशुपालन विभाग हि0 प्र0 के आंकड़ो के अनुसार)

क्रम सं0	विवरण	उत्पादन	
1.	जनसंख्या 2011 के गण्ना के अनुसार	6856509	
2.	जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग कि0मी	123	
3.	कस्बों की सं0	59	
4.	औसत दुग्ध उत्पादन (ग्राम में) संकर नस्ल गाय	4680	
5.	देसी गाय दुग्ध उत्पादन औसत (ग्राम)	1602	
6.	औसत दुग्ध उत्पादन भैंस (ग्राम)	3423	
7.	औसत दुग्ध उत्पादन दुधारू बकरी (ग्राम)	504	
8.	**कुल दुग्ध उत्पादन (000) टनों में** 1. कुल गाय का दूध (000) टनों में 2. कुल भैंस का दूध (000) टनों में 3. कुल बकरी का दूध (000) टनों में	1119.866 679.971 389.968 49.927	
9.	प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन दूध की उपलब्धता (ग्राम)	446	
10.	कुल ऊन उत्पादन भेड़ पालकों द्वारा (टनों में)	1645.278	
11.	कुल ऊन उत्पादन भेड़ फार्मो से (टनों में)	2.800	
12.	**कुल ऊन का उत्पादन**	1648.078	
13.	**कुल अण्ड़ों का उत्पादन (लाख)**	1049.668	
	1. देसी मुर्गीयों द्वारा (लाख) 2. उन्नत नस्ल द्वारा (लाख)	404.313 645.355	
14.	प्रतिव्यक्ति प्रति वर्ष अण्ड़ों की उपलब्धता	15	
15.	कुल मांस उत्पादन (टनों में) बकरे का मांस (टनों में) भेड़ का मांस (टनों में) सूअर का मांस (टनों में) मुर्गे का मांस (टनों में)	3965.775 2490.349 822.019 151.244 502.163	

हि0प्र0 में पशु चिकित्सा एवं पशु पालन संबंधी सेवाएं

इन सेवाओं के अन्तर्गत हि0 प्र0 के पशु पालन विभाग में पशु पालकों की सहायता हेतू प्रदेश में निम्न संस्थान कार्यरत है

1. पशुऔषधालय–1762
2. पशुचिकित्सालय –332
3. पोली कलीनिक–7
4. वेटनरी चैक पोस्ट–7
5. मुख्यमंत्री आरोग्य पशुधन योजना के अन्तर्गत खोले गए पशुऔषधालय –1012
6. पशु प्रजनन फार्म –3
7. भेड़ प्रजनन फार्म –4
8. खरगोश प्रजनन फार्म –2
9. मुर्गी फार्म व मुर्गी पालन विस्तार केन्द्र–10
10. घोड़ा व याक प्रजनन फार्म –1

पशु पालको की सहायता के लिए प्रदेश सरकार द्वारा चलाई गई स्कीमें

1. मुख्यमंत्री आरोग्य पशुधन योजना
2. अनुसुचित जाति परिवार के लिए 200 चूजों की स्कीम
3. केंद्र सरकार की सहायता से चलाई जाने वाली स्कीमें
    - गाय ओर भैंस प्रजाति के उत्थान के लिए राष्ट्रीय प्रोजेक्ट
    - बीमारियों के रोकथाम के लिए सहायता
    - दूध गंगा परियोजना
    - दुधारू पशु बीमाकरण योजना
    - भेड़ पालक बीमा योजना
    - भेड़ पालक समृद्धी योजना
    - बैकयार्ड मुर्गी पालन स्कीम

इन स्कीमों का लाभ लेने के लिए पशुपालक नजदीकी पशु चिकित्सालय से संपर्क करें ।

विभिन्न पशु प्रजातियों द्वारा दुग्ध उत्पादन निम्न प्रकार से है

प्रजातियां	2010–11	प्रतिशत	2011–12	प्रतिशत
गाय				
संकर प्रजाति	517.271	46.92	524.569	46.84
देसी नस्ल	152.076	13.79	155.402	13.88
कुल	669.347	60.71	679.971	60.72
भैंसें	383.743	34.81	389.968	34.8249.404
बकरी	49.404	4.48	49.927	4.46
कुल योग	1102.494	100.00	1119.866	100.00

हि0 प्र0में जिलावार दूध उत्पादन वर्ष 2011–12 व 2012.13 (000टन)

क्र सं0	जिला	वर्ष 2011–12	वर्ष 2012–13
1.	बिलासपुर	66.867	69.814
2.	चंबा	76.688	79.755
3.	हमीरपुर	82.616	85.326
4.	कांगड़ा	215.673	222.294
5.	किनौर	10.612	9.939
6.	कुल्लु	75.461	82.475
7.	लाहौल–स्पीति	7.210	6.983
8.	मंड़ी	211.162	211.795
9.	शिमला	123.939	122.123
10.	सिरमौर	82.745	78.629
11.	सोलन	90.460	90.294
12.	ऊना	76.433	79.185
	कुल	1119.866	1138.612

हि0 प्र0में जिलावार ऊन का उत्पादन वर्ष 2011–12 व 2012.13 (000टन)

क्र सं0	जिला	वर्ष 2011–12	वर्ष 2012–13
1.	बिलासपुर	9.620	10.377
2.	चंबा	454.564	446.670
3.	हमीरपुर	53.671	56.056
4.	कांगड़ा	224.176	220.802
5.	किनौर	137.179	146.518
6.	कुल्लु	233.416	243.214
7.	लाहौल–स्पीति	65.973	66.975
8.	मंड़ी	230.079	221.519
9.	शिमला	192.411	189.614
10.	सिरमौर	31.807	31.949
11.	सोलन	10.625	11.947
12.	ऊना	1.757	2.019
	कुल	1645.278	1647.660

हि0 प्र0में जिलावार अण्ड़ों का उत्पादन वर्ष 2011–12 व 2012.13 (000टन)

क्र सं0	जिला	वर्ष 2011–12	वर्ष 2012–13
1.	बिलासपुर	159.481	161.831
2.	चंबा	92.881	90.512
3.	हमीरपुर	35.088	34.576
4.	कांगड़ा	197.954	208.536
5.	किनौर	22.373	23.063
6.	कुल्लु	46.275	42.056
7.	लाहौल–स्पीति	10.516	11.074
8.	मंड़ी	79.733	78.257
9.	शिमला	83.943	81.765
10.	सिरमौर	45.064	44.868
11.	सोलन	108.399	106.887
12.	ऊना	167.961	185.961
	कुल	1049.668	1069.386

हि0 प्र0 एग्रो इकनामिक रिसर्च सेंटर शिमला–5 के अनुसार दूध मांस व ऊन उत्पादन की आर्थिकी निम्न प्रकार से है–

दुध उत्पादन के लिए औसत व्यय विभिन्न क्षेत्रों पर आधारित

1. संकर नसल की गाय.....6.81 से 12.02 रू0 प्रति लीटर
2. पहाड़ी देसी की गाय.....8.17 से 13.66रू0 प्रति लीटर
3. भैंस .....8.98 से 9.69रू0 प्रति लीटर

प्रति किलों भेड़ मांस उत्पादन का खर्च 23.75 रू0

प्रति किलों बकरे के मांस उत्पादन का खर्च 18.74

प्रति किलों ऊन उत्पादन का खर्च 106.22

हि0 प्र0 में 83.66 घरों में दुधरू पशुओं का पालन होता है। हि0 प्र0 में निम्न व मध्य पहाड़ी क्षेत्र में औसत दुग्ध उत्पादन निम्न प्रकार से है।

1.पहाड़ी देसी गाय .....2.07 से 2.22 ली0 प्रतिदिन

2.संकर नसल की गाय 4.5 से 5 ली0 प्रतिदिन

3. भैस 4.09 से 4.86 ली0 प्रतिदिन

पशु पालन विभाग व एग्रो इक्नामिक रिसर्च सेंटर शिमला–5 के सर्वे में पशु पालन संबंधी उत्पादन में निम्न बाधाऐं पाई गई हैं।

1. ग्रामीण इलाके में लोगों को आधुनिक व उन्नत डेरी पालन में ज्ञान की कमी जैसे कि उन्नत नस्ल पशु का प्रवधन, खानपान, प्रजनन व पशु चिकित्सा संबंधी जानकारी इत्यादि।
2. कुपोषण, कम दूध का उत्पादन व हरे चारे की कमी
3. प्रथम गर्भ धारण में ज्यादा उम्र
4. दो व्यांत में लम्बा समय
5. बार–बार कृत्रिम गर्भाधान टीकाकरण व बांझपन की समस्या
6. बिमारियों से मृत्यु
7. ग्रामीण इलाकों में दूध का कम रेट
8. पशु के दूध छोडनें या कम उत्पादन पर आर्थिक तंगी के कारण पशु के खान–पान व देख भाल में गिरावट

हि0 प्र0में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत मिलने वाली आर्थिक सहायता से डेरी पशु पालक दुग्ध उत्पादन की क्षमता में बढोतरी कर सकते है। जो कि निम्न प्रकार से हैं ।

1. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से कौशल व क्षमता का विकास, स्वंय सहायता समूह के सदस्यों को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से उन्नत डेरी पशु पालन प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
2. कम व्याज पर बैंक लोन से उन्नत संकर नसल के दुधारू पशुओं की खरीद, पशुशाला की मुरम्मत, चारे व पानी की खुरली का प्रावधान, घास कुतरनें की मशीन लगाना इत्यादि।
3. स्वंय सहायता समूह के रिवोलवींग फंड़ और कोरपस फंड़ सें संतुलित आहार, मिनरल मिकचर खरीदना तथा समयानुसार पशु चिकित्सा सहायता प्रदान करना। चूंकि कम उत्पादन व दूध छोडने पर पशु पालक को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है जिस वजह से वह इस समय पशु को आवश्यकतानुसार पोषण नही करवा सकता और धीरे –धीरे पशु का स्वास्थय गिरता जाता है जिससे की आने वाले समय मे उसके दूध उत्पादन में गिरावट आती है। अतः स्वंय सहायता समूह के पास उपलब्ध रिवोलवींग फंड़ और कोरपस फंड से पैसा लेकर जरूरत के अनुसार पशु के पोषण व पशु चिकित्सा संबंधी चीजें खरीद सकतें है।
4. दुधारू पशुओं के बीमाकरण के लिए पशु पालन विभाग द्वारा चलाई लाइवस्टाक इन्शोरेस स्कीम के तहत पशु पालक को पशु बीमा राशी में 50 प्रतिशत की छूट दी जाती हैं। पशु पालक इस स्कीम का लाभ ले सकतें है।
5. कृषि विभाग द्वारा वर्मीकमपोस्ट खाद तैयार करने के लिए किसानों को आर्थिक सहायता का समूह के सदस्य लाभ ले सकते है।
6. village organization / Panchayat organization के माध्यम से दूर दराज के गांव में मिल्क बल्क कूलरज, पनीर व खोया बनाने का यूनिट, दूध प्रसेसिंग व पैकेजिंग यूनिट सथापित किये जा सकते है जिससे कि दूध बिक्रि की समस्या दूर की जा सकती है और दूध से बनने वाले उत्पाद को बड़े स्तर पर किसी नजदीकी शहर या कस्बे में बेचा जा सकता है।

पशु पालकों के लिए उन्नत किस्म के दुधारू पशुओं जैसे जर्सी संकर, जर्सी सिंधी, होल्स्टींन संकर गाय के पालन पोषण संबंधी मार्गदर्शी सिद्धान्त :–

1. प्रबंधन संबंधी सिद्धान्त

- पशुशाला साफ सुथरी हवादार अच्छी रोशनी व सीलन रहित होनी चाहिए।
- घास व पानी के लिए पशुशाला में खुर्लियां होनी चाहिए ताकि चारे का सही इस्तेमाल हो सके।
- पशुशाला का फर्श पक्का व फिसलन रहित होना चाहिए और पानी मलमूत्र निकासी के लिए फर्श हल्का ढलानदार तथा फर्श के अंत में नाली का प्रावधान होना चाहिए
- मौसम के अनुसार पशु को पशुशाला से अंदर बाहर करना चाहिए दिन में कुछ समय की धूप शरीर को विटामिन–ड़ी प्रदान करता है।
- पशु को आवश्यकता अनुसार नहलाना तथा शरीर पर ब्रुश फेरना इससे शरीर में लगने वाले बाह्य परजीवियों से छुटकारा मिलता है।
- दूध निकालने से पहले थन को गुनगुने पानी से धोना व साफ कपड़े से सूखा करना तथा दूध निकालने वाले व्यक्ति को दूध निकालने से पहले हाथ साबुन से धोना।

2. खान–पान संबंधी सिद्धान्त

दुधारू पशु को प्रतिदिन संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। जिसके संघटक निम्न प्रकार से है।

1. मोटे अनाज (मक्की, ओट, जौ) –42 प्रतिशत
2. खली (मूंगफली ,सरसों , विनौला इत्यादि) –28 प्रतिशत
3. गेंहू का छिलका (चोकर) –27 प्रतिशत
4. मिनरलज –2 प्रतिशत
5. नमक –1 प्रतिशत

1किलो संतुलित आहार की आवशकता पशु के सामान्य शरीर रख रखाव के लिए रहती है

इसके इलावा प्रति 2.5–3 किलों दूध उत्पादन पर एक किलों संतुलित अहार की अतिरिक्त आवश्यकता रहती है।

- हरा व सूखा चारा
- हरा चारा–5–6 किलो प्रतिदिन
- सूखा चारा– आवश्यकतानुसार

3. हरा व सूखा चारा पशु को कुतर कर देना चाहिए ।

- मिनरल मिक्चर –30–50 ग्राम पशु के दुग्ध उत्पादन के अनुसार
- नमक– 20–30 ग्राम पशु के दुग्ध उत्पादन के अनुसार
- पानी आवश्यकता अनुसार दिन में दो बार सर्दियों में बहुत ठण्ड़ा पानी न पिलाया जाए।

चूंकि हि0 प्र0 में पूरी साल हरा चारा पशुओं के लिए उपलब्ध नहीं होता है जिस वजह से दुधारू पशु के स्वास्थय व दुग्ध उत्पादन में गिरावट आ जाती हें क्योंकि सूखे चारे में प्रोटीन, मिनरल व विटामिन की कमी होती है। जहां सिंचिंत जमीन उपलब्ध है वहां पशु पालक मौसम के अनुसार वरसीम, जई, मक्चरी, मक्की जैसे चारा फसलों का उत्पादन कर सकते हे। इसके इलावा पशु पालक अपनी खेतों के किनारों में चारे वाले पोधों का रोपण कर अधिक समय में हरा चारा उपलब्ध करवा सकतें है। समुद्रतल से उंचाई के अनुसार विभिन्न चारे के पोधों का रोपण किया जा सकता हें जैसे कि ब्यूल, कचनार, शहतूत, रूबीनिया, ब्यूसीनियां, खिड़क, धरेक इत्यादि। बरसात के मौसम में उपलब्ध अधिक हरे चारे को साईलेज के रूप में भी संरक्षित किया जा सकता है जो कि सर्दीयों के मौसम में दुधारू पशुओं को खिलाया जा सकता है।
भूसे व पराल की पोषण गुणवता बढ़ाने के लिए इसको यूरिया व शीरे से उपचारित किया जाता है।

4. प्रजनन संबंधी सिद्धान्त

अच्छे प्रबंधन व खान–पान के प्रचलन से बछड़ियां में पहला बच्चा देने की उम्र को कम किया जा सकता है और दो व्यांत के बीच के समय को भी कम किया जा सकता है संकर नसल की गाय में पहला बच्चा देने की उम्र लगभग 2.5 से 3.6 वर्ष है। यह गाय लगभग 205 से 274 दिनों तक दुग्ध

(I.T.)

उत्पादन में रहती हें आमतौर पर दुधारू गाय बछड़ा देने के 90 दिन के बाद गर्मी में आ जाती है और 3 महीने के बाद कृत्रिम गर्भधान हो जाना चाहिए तभी गाय का दूध उत्पादन तथा दो व्यांत के बीच का समय सामान्य बना रहेगा ।यदि बछड़ा देने के 3 महीने उपरांत गाय गर्मी में नहीं आती है तो स्थानीय पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। गाय को मध्य गर्मी के समय में कृत्रिम गर्भाधान कराना चाहिए जो कि गर्मी शुरू होने से 14–16 घण्टों के बाद आता है इसमें गर्भधारण की संभावना अधिक रहती है यदि गाय को बार–बार कृत्रिम गर्भाधान करवाना पड़ रहा है तो किसी विशेषज्ञ पशु चिकित्सक की सलाह लेकर इलाज करना चाहिए।

5. बिमारियों की रोकथाम संबंधी

- टीकाकरण :– पशुओं को समय–समय पर पशु चिकित्सक की सलाह से मुहखुर गलघोटू वलैक क्वाटर भेड़ बकरी में पी0पी0आर0 इत्यादि बिमारियों से संबंधित टीकाकरण करना चाहिए ।
- बाह्य तथा अंतपरजीवियों के रोकथाम के लिए समय –समय पर दवाईयां देनी चाहिए । अंत परजीवियों की रोकथाम के लिए साल में 2 से तीन बार दवाई दी जानी चाहिए ।
- बछड़े की देखभाल – नवजात बछड़े को गाय का पहला दूध पिलाना अति आवश्यक हैं। एक सप्ताह तक बछड़े को शरीर के वजन के 10 प्रतिशत तक प्रतिदिन दूध मिलना चाहिए। एक सप्ताह से 45 दिन तक मिल्क रिपलेसर दिया जा सकता है और 45 दिनों से चार महीनों तथा काफ स्टारटर दिया जा सकता है और उसके बाद बछड़े की फीड़ शुरू की जाती है। जिस की मात्रा 8 महीने की उम्र तक लगभग 1 किलों तक आ जाती है। बछड़े को एक सप्ताह का होने पर पेट में कीड़े मारने की दवा पिलाई जाती है और 15 दिनों के बाद एक खुराक और दी जाती है। फिर 3–4 महीनों में यह दवाई दोबारा दी जाती है। बछड़े को एक महीने के भीतर सींग रहित किया जाना चाहिए।

  डेरी पशु पालन के इलावा प्रदेश के पशु पालक राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन प्रोग्राम से वितिय सहायता लेकर भेड़ – बकरी

पालन व मुर्गी पालन का भी व्यवसाय कर सकते हें भेड़ बकरी पालन का व्यवसाय हि0 प्र0 के ऊंचाई वाले पर्वतीय इलाकों में अच्छा चलता है। जहां कि भेड़ बकरियां को चरने के लिए घासनियां उपलब्ध है और जंगल से चारे की पंतियां भी उपलब्ध हो सकती हैं।

भेड़ पालकों के उत्थान हेतु पशु विभाग हि0 प्र0 ने भी कई स्कीम चलाई है जिसका भेड़ पालक लाभ ले सकते है मुर्गी पालन का व्यवसाय हि0 प्र0 के निचले व गर्मी वालें इलाके में अच्छा चल सकता है। मुर्गी पालने वाले किसान राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन प्रोग्राम के माध्यम से अधिक सहायता लेकर इसमें अच्छा कार्य कर सकते हे। मुर्गी पालकों के लिए भी पशु पालन विभाग हि0 प्र0 ने कई स्कीम चलाई है जिनका किसान लाभ उठा सकते है।